ग्रीष्मकालीन मूंग उत्पादन : दाल उत्पादन में आत्मनिर्भरता की ओर आवश्यक कदम

राजेश कुमार मीना, राजेश बिश्नोई, राम किशोर फगोड़िया,
एवं सुरेन्द्र कुमार मीना

विश्व में उगाये जाने वाली दालों का 33 प्रतिशत क्षेत्रफल एवं 22 प्रतिशत उत्पादन भारत में होता है। फिर भी भारत को भारी मात्रा (3.04 टन) में दालों का आयात करना पड़ता है। ग्रीश्मकालीन मूंग उत्पादन में फसल चक्र को बिना प्रभावित किये हुये, कम अवधि वाली मूंग का मार्च से जून के महिनों के दौरान उत्पादन किया जा सकता है, इसे हम 8–10 क्विंटल प्रति एकड़ की उपज प्राप्त कर सकते हैं।

एशियाई लोगों के लिए दालें, प्रोटीन का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है। विश्व स्तर पर भारत दालों का सबसे बड़ा उत्पादक एवं उपभोक्ता है। यू.एस.डी.ए. सर्वे के अनुसार 30–40 प्रतिशत भारतीय जनसंख्या शुद्ध शाकाहारी हैं जिनके लिए दालें प्रोटीन का महत्वपूर्ण स्त्रोत है। एक स्वस्थ शरीर के लिए संतुलित प्रोटीन की मात्रा महत्वपूर्ण अंश है। इसकी कमी में हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है। भारत में दलहनी फसलों में मूंगबीन का महत्वपूर्ण स्थान है। यह आर्थिक उपज के साथ–साथ हमारी मृदा की उर्वरता बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। विश्व में उगाये जाने वाली दालों का 33 प्रतिशत क्षेत्रफल एवं 22 प्रतिशत उत्पादन भारत में होता है। फिर भी भारत को भारी मात्रा में दालों का आयात करना पड़ता है। दालों का उत्पादन बढ़ाने के लिए ग्रीष्म कालीन दालों का क्षेत्र बढ़ाने के साथ–साथ इसकी उन्नत तकनीक अपनाने की आवश्यकता है। वर्ष 2013–14 के आँकड़ों के अनुसार, भारत में मूँगबीन 3.40 मिलियन हैक्टेयर क्षेत्र में उगाई गई और 1.61 मिलियन टन का उत्पादन हुआ, जो हमारी तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए बहुत कम है।

मूंगबीन मुख्य रूप से खरीफ ऋतु में उगाई जाने वाली फसल है। लेकिन इस अवधि में बड़े पैमाने पर रोग कारको, कीटो एवं असामान्य मौसम के कारण अनुकूल वातावरण का निर्माण नही हो पाता हैं। जो फसल की उपज में महत्वपूर्ण गिरावट का कारण है। जिसके कारण हमारी प्रति हैक्टेयर उपज (500 कि.ग्रा./हैक्टेयर) न्यूनतम स्तर पर है। इन सब समस्या को ध्यान में रखते हुये ग्रीष्म उत्पादन एक महत्वपूर्ण विकल्प है, जिसमें फसल चक्र को बिना प्रभावित किये हुये, कम अवधि वाली मूँग का मार्च से जून के महीनों के दौरान उत्पादन किया जा सकता है, जो इस अवधि में सामान्यतया अन्य फसलों की खेती नही कि जाती है। जहाँ सिंचाई की पर्याप्त व्यवस्था होती है, वहाँ पर इसकी बुवाई आरंभिक मार्च में की जाती है, जो रबी फसलों की कटाई एवं खरीफ फसलों की बुवाई के बीच का समय होता है। इस दौरान विभिन्न रोग तथा कीटों का प्रकोप भी कम होता है। मूँग दलहनी फसल होने के कारण मिट्टी की उर्वरता बढ़ाती है, जो आने वाली खरीफ फसल के लिए लाभदायक होती है।

ग्रीष्मकालीन मूँग की खेती के अधिक उत्पादन के लिए निम्नलिखित महत्वपूर्ण निर्देशों को ध्यान में रखना जरूरी है:–

1. प्रजाति कम जीवन चक्र वाली होनी चाहिए।
2. प्रकाश व ताप से असंवेदनशील होनी चाहिए।
3. अधिक उपजवान होनी चाहिए।
4. रोग प्रतिरोधी होनी चाहिए।
5. अधिक पोषक तत्व अवशोषण की क्षमता होनी चाहिए।
6. प्रजाति उन्नतशील होनी चाहिए।

ग्रीष्मकालीन मूँग की खेती के लिए उपयोगी प्रजातियाँ–

क्र. सं.	क्षेत्र / राज्य	प्रमुख किस्में
1	उत्तर पूर्वी क्षेत्र	पन्त मूंग–4, कृष्णा–2, मालवीय जनकल्याणी, मालवीय जलचेतना,
2	उत्तर पश्चिम क्षेत्र	पूसा विशाल, पूसा बैशाखी, मुस्कान, एचयू. एम.–10, एच.यू.एम.–16, एच.यू.एम.–2, टी. एम.बी–37, सम्राट, मेहा, वर्षा
3	मध्य भारत क्षेत्र	कोपेरगांव, पूसा–9531, बीना मूंग–6, बीना मूंग–8, क–581, को–6, आरएमगी–268

ग्रीष्मकालीन मूँग उत्पादन हेतु शस्य कियायें –

- ग्रीष्म मूँग की अच्छी पैदावार हेतु समतल एवं उपजाऊ भूमि जिसकी पी.एच. 6.5 से 7.5 के मध्य में हो उपयुक्त मानी जाती है।
- खेत में हल्का पलेवा कर उसकी एक जुताई करनी चाहिए जिससे मिट्टी भुरभरी एवं ढेले रहित हो जाये जो बीज अँकुरण के लिए अनुकूल होती है।
- अच्छी पैदावार के लिए सिफारिश किया हुआ प्रमाणित बीज का ही प्रयोग करें, खाद एवं उर्वरक की मात्रा का निर्धारण मृदा के परिक्षण के आधार पर करना चाहिए। और अगर परीक्षण नही करवा सकते हैं तो 5 टन गोबर की खाद खेत तैयार करते समय डालनी चाहिए तथा

नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश, सल्फर एवम् जिंक की मात्रा क्रमशः (20:40:20:20:15) कि.ग्रा./हैक्टेयर की दर से बुवाई के लिए डालनी चाहिए।

- बीज को बोने से पूर्व कवकनाशी दवाओं, अनुकूल राइजोबियम टीका एवं पी.एस.बी टीके से अवश्य उपचारित करना चाहिए। राइजोबियम टीका पादप की जड़ों में ग्रंथियों का निर्माण करते हैं जो भारी मात्रा में पर्यावरणीय नत्रजन को जमीन के अन्दर स्थापित करते है, जो फसलोत्पादन पादप वृद्धि में आवश्यक भूमिका अदा करते है।
- ग्रीष्म मूँगबीन की बोआई के लिए मार्च का प्रथम सप्ताह उपयुक्त रहता है वैसे रबी की फसलों की कटाई होने के बाद यथाशीघ्र इसकी बुवाई कर सकते है।
- 20–25 कि.ग्रा./हैक्टेयर बीज की मात्रा प्रयोग करें। पंक्ति से पंक्ति 30 सें.मी. और पौधे से पौधे की दूरी 10 सें. मी. रखनी चाहिए।
- अंकुरण के बाद अनुकूल पादप संख्या रखनी चाहिए।
- आरम्भिक दिनों में 6–7 दिन एवम् बाद में 10–12 दिन अन्तराल पर सिंचाई करनी चाहिए।
- अच्छी फसल के लिये खरपतवारों का पूर्णतया नियन्त्रण बहुत आवश्यक है, इसके लिए पेन्डीमिथालिन 2.5 ली./हैक्टेयर बोआई के 2–3 दिन बाद छिड़कना चाहिए।
- मूँग में सामान्यतः पीला मोजेक रोग की संभावना होती है। जो सफेद मक्खी के द्वारा फैलता है इसको नियन्त्रण करने के लिए 0.1 प्रतिशत मेटासिस्टाक्स का छिड़काव करना चाहिए और आवश्यक होने पर 15 दिन के बाद दोबारा छिड़काव करें।
- सामान्यता मूँग 60–65 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। जब पौधे पीले पड़ने लगे तथा फल्लियों का रंग बदलने लगे तो फसल की कटाई कर लेनी चाहिए। कटाई के उपरान्त बंडल खेत में ही बांधकर अच्छी तरह से सुखा लेना चाहिए जिससे मड़ाई अच्छी तरह से कम समय में हो जाये। मड़ाई के लिए ट्रैक्टर चालित थ्रैशर का उपयोग कर सकते हैं कुछ प्रजातियों में पकने पर फल्लियां तोड़ ली जाती है और अवशेषों को खेत में जुताई द्वारा मिला दिया जाता है इससे मृदा की उर्वरता भी बढ़ जाती है।
- अगर उपर दी गई सभी तकनीकी क्रियाओं को अपनाकर खेती करने पर 10–11 क्विन्टल प्रति हैक्टेयर की उपज प्राप्त कर सकते है।